Volume 2; Issue 3
July to September 2025

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 3; July to September, 2025; Page No. 12-18

Peer Review, Indexed and Refereed Journal

स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप एवं परिदृश्य

बबिता मौर्या

शोध छात्रा,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,

वाराणसी।

शोध सारांश

स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और परिदृश्य स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के समय से संबंधित है। यह समय भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति में बड़े परिवर्तनों का गवाह रहा है, और इन परिवर्तनों ने पत्रकारिता को भी प्रभावित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय पत्रकारिता का स्वरूप लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित रहा। पत्रकारिता ने स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया। इस युग में हिंदी पत्रकारिता में विषयों की विविधता देखी गई। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और खेलकूद के मुद्दों पर ध्यान दिया गया। इस काल की पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि है भारतीय राष्ट्रवाद का उदय।

मुख्य शब्द: स्वातंत्र्योत्तर युग, हिंदी पत्रकारिता एवं परिदृश्य

पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज्म' शब्द व्यवहृत होता है जो 'जर्नल' से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। वर्ष 1950 से हिंदी की पत्रकारिता खासकर साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में नए युग का परिवर्तन होता है। इसी वर्ष हिंदी को बहुआयामी उत्कर्ष प्रदान करने वाली पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ जिसका

संपादन 1903 से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया। 1900 से 1950 के अंतराल में हिंदी में कई उन्नत चरित्र के साहित्यिक पत्र निकले। 20वीं शताब्दी के प्रथम दो दशक के प्रमुख पत्र आनंद कदंबिनी, जासूस, क्षत्रिय,मासिक वैश्योपकारक, आनंद, स्वराज, मासिक देवनागर, मासिक नृसिंह, कर्मयोगी, मर्यादा, प्रवासी भारतीयों का गदर, प्रताप, प्रभा, नवजीवन, ज्ञान शक्ति, विजय, कर्मवीर, भविष्य, विश्वमित्र आदि है।

इस काल की पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि है भारतीय राष्ट्रवाद का उदय।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और परिदृश्य स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के समय से संबंधित है। यह समय भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति में बड़े परिवर्तनों का गवाह रहा है, और इन परिवर्तनों ने पत्रकारिता को भी प्रभावित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय पत्रकारिता का स्वरूप लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित रहा। पत्रकारिता ने स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया। इस युग में हिंदी पत्रकारिता में विषयों की विविधता देखी गई। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और खेलकूद के मुद्दों पर ध्यान दिया गया।

स्वतंत्रता के कुछ वर्ष बाद हिंदी पत्रकारों की जो पीढ़ी तैयार हुई उनमें कर्तव्य बोध से अधिक अधिकार बोध का भाव था। स्वयं को बुद्धिजीवी कहने वाला पत्रकार सुविधा भोगी हो गया, अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए वह जनहित को हथियार बनाने लगा। उन्हीं दिनों प्रगतिशील पत्रकारिता के नाम पर कुछ साहित्यकार सामने आए, उन्होंने साहित्यिक जड़ता को तोड़ने का प्रयास किया।'संगम' साप्ताहिक के संपादक इलाचंद्र जोशी 'टाइम्स आफ इंडिया' द्वारा प्रकाशित नए हिंदी साप्ताहिक 'धर्मयुग' के प्रथम संपादक बनकर बंबई पहुंच गये। उन्हीं दिनों दिल्ली से भी एक नया साप्ताहिक 'सप्ताहिक-हिंदुस्तान' प्रकाशित हुआ। सरकार की ओर से मासिक पत्रिका 'आजकल' शुरू किया गया। यही वह युग है जब हिंदी में लघु पत्रिकाओं का उदय हुआ और हिंदी पत्रकारिता व्यावसायिक पत्रकारिता और लघु पत्रिका नाम के दो खेमों में बंट गयी। प्रमुख लघु पत्रिकाएं थीं- 'नए पत्ते' ,'विहान', 'नई कविता', 'प्रतीक', 'कल्पना','नया साहित्य', 'नया पथ' आदि। समाज की जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था को चुनौती देने का स्वर इन पत्रिकाओं में नहीं उभर पाया।

साहित्यिक पत्रकारिता का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा ही हो गया था। भारतेंदु का अधिकांश साहित्य पत्रकारिता का साहित्य है। इसलिए उसमें उन शाश्वत मूल्यों की कमी है, जो साहित्य को युग सीमा से मुक्त करने वाला और उसे युग-युग को आलोक देने की शक्ति से संपन्न करने वाला अनिवार्य तत्व है। अर्थात् भारतेंदु युग का साहित्य शाश्वत मानव मूल्यों और मानवीय संवेदना की कलात्मक भूमि से उदासीन होकर युग-धर्म के

प्रति अधिक सचेत था, इसलिए वह युग विशेष का साहित्य होकर रह गया, युग-युग का साहित्य न हो सका। कहना न होगा कि यह धारणा उन कलावादियों की है, जो शाश्वत सत्य की चिंता में युग-धर्म से आंख मूंद लेते हैं, वह पलायन की दिशा है।

पत्रकारिता ने हिंदी गद्य को रूप और स्थिरता प्रदान किया। हिंदी साहित्य की जातीय भूमिका का निर्माण करने में भी समाचार पत्रों का योगदान सराहनीय है। हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता ने कितने ही दिग्गज रचनाकारों को जन्म दिया है। 'मतवाला' का प्रकाशन हिंदी पत्रकारिता में साहित्यिक पक्ष के अभ्युदय का संकेत था। इसी पत्र ने हिंदी साहित्य को 'निराला' जैसा कवि दिया। महाकवि जयशंकर प्रसाद की प्रारंभिक रचनाएं 'इंदु' मासिक में प्रकाशित हुई थीं, और उपन्यास सम्राट प्रेमचंद भी मूलतः पत्रकार थे।

हिंदी साहित्य को नई गति और दिशा देने में साहित्यिक पत्रिकाओं का अविस्मरणीय योगदान रहा है। नये साहित्यकारों का परिचय साहित्य जगत से कराने में पत्रिकाएं अहम भूमिका निभाती हैं।

साहित्य की रचना और प्रेषणीयता का आधार मानसिक वृत्तियां और जीवन की सहज अनुभूतियां हैं। साहित्य का मूल्य जीवन के मूल्यों से भिन्न नहीं होता और साहित्यिक अनुभूतियां जीवन की अनुभूतियों से कहीं अलग या विशिष्ट नहीं होती। पत्रकारिता का भी जीवन मूल्यों से सीधा संबंध है। जिन जीवन मूल्यों की स्थापना साहित्य में की जाती है, उन्हें पत्रकारिता व्यावहारिक आयाम देती है।

विभाजन के साथ ही सही आजादी जो कल तक स्वप्न थी आज जनता के द्वार पर खड़ी थी और भारतीय जनमानस कुछ समय तक आजादी के स्वर्णिम कल्पनाओं में खोया रहा, तभी उसे 1962 में चीन के आक्रमण का गहरा झटका लगा। आजादी का सर्वाधिक लाभ मिला हिंदी पत्रकारिता को, जो अब तक ब्रिटिश सरकार के दोहरे मापदंडों का शिकार होती रहीA सरकारी प्रतिबंधों के खत्म होने के कारण पूरे देश में हिंदी पत्रिकाओं की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। हिंदी पत्रकारिता का केंद्र बनी दिल्ली, जहां से दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि विविध काल अवधि के पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं।

दिल्ली के साथ-साथ मुंबई, कोलकाता ,इलाहाबाद, पटना, वाराणसी भी हिंदी पत्रकारिता के गढ़ बन गये। काल अवधि के अंतराल होने के साथ ही विषय वस्तु में भी विविधता आने लगी, दैनिक समाचार पत्र अपने में संपूर्णता लाने के प्रयास में हैं। कुछ महत्वपूर्ण हिंदी पत्र सप्ताह के सात दिन अलग-अलग विशेषांक प्रकाशित करते हैं।

इतनी विविधता के बावजूद समाचार पत्र के साथ बच्चों की पत्रिका (नंदन, चंपक आदि), महिलाओं की पत्रिका (मनोरमा, वामा आदि), फिल्मी- पत्रिका (मायापुरी, फिल्म फेयर) और सामाजिक पत्रिका (सरिता, मुक्ता आदि) के पाठक हैं। वहीं परिवार के बुजुर्ग सदस्य धार्मिक पत्रिकाओं(कल्याण, अखंड ज्योति)के पाठक हैं। इसके साथ ही परिवार में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण स्वास्थ्य पत्रिका नीरोगधाम आदि के प्रति रुचि बढ़ रही है। खेल के प्रति बढ़ते रुझान के कारण खेल पत्रिकाओं की संख्या और लोकप्रियता में वृद्धि हो रही है।

शिक्षा का प्रसार और रोजगार की समस्या और तीव्र प्रतियोगिता के कारण शिक्षा रोजगार और प्रतियोगिता शिक्षापरक पत्रिकाओं की लोकप्रियता में तीव्र वृद्धि हुई है। विज्ञान-पत्रिका (विज्ञान प्रगति) और प्रतियोगिता दर्पण जैसी पत्रिकाओं की प्रसार संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। प्रतियोगी परीक्षाओं में अपनी उपयोगिता के कारण योजना, कुरुक्षेत्र जैसी सरकारी पत्रिकाएं अपनी लोकप्रियता बढ़ाने में सफल हुई हैं।

अन्य पत्रिकाएं व्यापार, उद्योग, कृषि,शिक्षा, शोध आदि पत्रिकाएं समाज के कुछ विशिष्ट वर्ग के लिए उपयोगी होने के कारण विशेष वर्गों में लोकप्रिय हैं।

साप्ताहिक, पाक्षिक पत्रिकाएं (धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, दिनमान, रविवार, माया) सत्तर और अस्सी के दशक में अत्यधिक लोकप्रिय थीं। अपनी विषयवस्तु, आकर्षक साज-सज्जा के कारण हिंदी पत्रकारिता में ये अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल रहीं, किंतु कुछ विशिष्ट कारणों से एक-एक कर सभी पत्रिकाएं बंद हो गयीं और स्थिति यह हो गयी कि राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी पत्रिकाओं का अकाल-सा पड़ गया। इस कमी को शीघ्रता से पूरा किया, पत्रिका 'इंडिया टुडे' ने जो अब पाक्षिक से साप्ताहिक हो गयी।

हिंदी पत्रकारिता में लघु पत्रिकाएं संख्या में अधिक होने के बावजूद व्यावसायिकता से अलग रहने के संकल्प से बंधी होने के कारण आर्थिक संकट से जूझती रहती हैं और ये पत्रिकाएं जनता की बात कहने का दावा करने के बावजूद स्वयं को जन सामान्य से जोड़ने में असफल रही हैं, इनका प्रसार विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों, शोध छात्रों और पुस्तकालयों तक ही सीमित है। हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता के लिए यह शुभ संकेत नहीं है।

आर्थिक संकट और सरकारी उपेक्षा के बावजूद हिंदी पत्रकारिता की स्थिति संतोषजनक है। सभी हिंदी पत्र-पत्रिकाएं अपना एक राष्ट्रीय लक्ष्य रखती हैं, जो विविध भाषा -भाषी भारत के लिए एक कठिन लक्ष्य होते हुए भी असंभव नहीं है, इस असंभव लक्ष्य के निकट पहुंचने में हिंदी पत्रकारिता सफल रही है।

हिंदी पत्रकारिता में भाषा का अध्ययन करने पर हिंदी पत्रकारिता में भाषा के विविध रूप सामने आते हैं। भाषा को प्रभावित करने में दैनिक समाचार पत्रों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। कम समय में अधिक से अधिक सूचना पाठकों तक प्रेषित करना इनका दायित्व होता है, इस दायित्व को निभाने के लिए पत्रकार अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर यथावसर नये शब्दों की रचना कर लेते हैं यही कारण है कि दैनिक पत्रों की भाषा सर्वाधिक परिवर्तनशील और विविधतापूर्ण होती है, समाचार पत्रों की भाषा में शब्द, वाक्य, पद के स्तर पर विविधता और नवीनता होती है। समाचारों की भाषा की विविधता का रूप राजनीतिक, सामाजिक, खेल- जगत, बाजार-भाव, संपादकीय लेख, कार्टूनों, पाठकों के पत्रों की भाषा, साप्ताहिक विशेषांक, साहित्यिक खंड, फिल्म जगत लेखों (फीचर), समीक्षा और साप्ताहिक भविष्यफल आदि वर्गीकरण में प्राप्त होता है। इन सभी विविध भाषा रूपों में नवीनता, रोचकता और संप्रेषणीयता का गुण पाया जाता है। समाचारों में शीर्षक के आधार पर विविधता प्राप्त होती है, प्रमुख शीर्षक प्रासंगिक, मुख्य, गौड़ और मध्यस्थ शीर्षक समाचार का आकर्षण बढ़ाने में सक्षम होते हैं, क्योंकि वर्तमान समय में समय के अभाव के कारण पाठक मुख्यतः समाचार की अपेक्षा शीर्षक पर ही अधिक ध्यान देता है, यही कारण है कि शीर्षकों की रचना, पॉइंट, साइज और साज-सज्जा की ओर ध्यान दिया जाता है। विविध भाषा रूपों में दोषों के विविध रूप भी प्राप्त होते हैं, जो शब्द, वाक्य, लिंग, वचन और क्रिया के स्तर पर होती है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता में विशुद्ध, जनोन्मुख प्रयोगधर्मी अनुदित, शिथिल और विविध भाषा रूप आदि विशेषताएं पायी जाती हैं जो भाषा को जीवंत बनाती हैं।

पत्रकारिता का अध्ययन करते समय एक शब्द बार-बार प्रयुक्त होता है, और उसका प्रभाव बार-बार दिखाई पड़ता है वह है 'विज्ञापन'। पत्रकारिता में विज्ञापन का वही महत्त्व है, जो मानव जीवन में रक्त संचार प्रणाली का होता है पत्रकारिता और विज्ञापन एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना विज्ञापन के पत्रकारिता संभव नहीं है, इस प्रकार स्वतंत्र विज्ञापन भी एक कठिन कार्य है, आजकल विज्ञापन के अनगिनत स्रोत खुल गए हैं, किंतु विज्ञापन के उचित प्रभाव के लिए किसी न किसी माध्यम का सहारा लेना पड़ता है, चाहे वह फिल्म हो, धारावाहिक हो या समाचार पत्र-पत्रिकाएं। माध्यमों की विविधता के कारण विज्ञापन की शैली, विषयवस्तु में अंतर प्राप्त होता है, किंतु इसका मुख्य उद्देश्य यही है कि विज्ञापन की भाषा में जनोन्मुखता बढ़ती रहे। जनोन्मुख भाषा के कारण विज्ञापन में

साहित्यिकता, माधुर्य, अनुप्रासमयता के साथ अंग्रेजी शब्दों की बहुलता और अनौपचारिक भाषा के प्रयोग में वृद्धि हुई है।

पत्रकारिता एक "मिशन" "व्यवसाय" होने के साथ-साथ जनसंचार का माध्यम भी है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में संचार माध्यमों में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है, आधुनिक संचार माध्यमों के महत्व में वृद्धि हुई है, किंतु परंपरागत संचार माध्यमों का महत्व कम नहीं हुआ है। सभी जनसंचार माध्यम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। स्थान और स्थिति के अनुसार किसी का महत्व बढ़ जाता है और किसी का घट जाता है, किंतु सभी का लक्ष्य यही होता हैA जन सामान्य को सूचना संप्रेषित करना। लोकतंत्र में सूचना प्राप्त करने का अधिकार महत्वपूर्ण है। संचार माध्यमों की सफलता इसी से प्रमाणित होती है कि, स्वतंत्रता के बाद भारत की सत्तर प्रतिशत अशिक्षित जनता अपने मताधिकार का प्रयोग कर सत्ता परिवर्तन करने में सफल रही, संचार माध्यमों के इस प्रभाव के कारण शासक वर्ग ' येन केन प्रकारेण' जनता के सूचना प्राप्त करने के अधिकार को सीमित करने के प्रयास में लगा रहता है। स्थिति बहुत अच्छी न होते हुए निराशाजनक नहीं है, भारत का लोकतंत्र और पत्रकारिता प्रगति की राह पर है यह पत्रकारिता की विजय यात्रा है।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन पत्रकारिता ने कई बदलाव देखे हैं- सामाजिक मुद्दों से लेकर राजनीतिक घटनाक्रमों तक। स्वतंत्रता से पहले की पत्रकारिता ने जहां आजादी के आंदोलन को समर्थन दिया, वहीं स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता ने राष्ट्र निर्माण और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 21वीं सदी की शुरुआत में इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन ने पत्रकारिता के तरीके और परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। समाचार, वेबसाइट्स, ब्लॉक्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने परंपरागत मीडिया को चुनौती दी। न्यू मीडिया ने सूचना का लोकतंत्रीकरण किया और व्यक्ति को अपनी आवाज उठाने का मंच प्रदान किया।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप निरंतर बदलता रहा है, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य हमेशा जन जागरूकता और समाज की समस्याओं को उजागर करना रहा है। आज की हिंदी पत्रकारिता में जहां तकनीकी और डिजिटल माध्यमों का प्रभाव है, वहीं पारंपरिक मूल्यों और नैतिकता को बनाए रखने की चुनौती भी है। हिंदी पत्रकारिता भारतीय समाज और लोकतंत्र का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ बनी हुई है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से हिंदी पत्रकारिता में विषयों और दृष्टिकोणों की विविधता बढ़ी। अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं, व्यापार और सांस्कृतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ ही हिंदी पत्रकारिता ने अपने पाठकों के व्यापक

हितों को पूरा करने का प्रयास किया। साहित्य और पत्रकारिता दोनों एक ही धरातल से उठकर समान उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक ही दिशा में अग्रसर हैं।

संदर्भ ग्रंथ -

1- साहित्यिक पत्रकारिता- डॉ राम मोहन पाठक पृ०सं-111

2- हिंदी पत्रकारिता- कृष्ण बिहारी मिश्र पृ०सं०-4

3- साहित्यिक पत्रकारिता- डॉ राम मोहन पाठक पृ०सं०-1

4- आधुनिक पत्रकारिता- डॉ अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी 1994

5- जनसंचार के विविध आयाम-बृजमोहन गुप्त, राधा कृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण

6- जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता-डॉ अर्जुन तिवारी, जय भारती प्रकाशन, लालजी मार्केट, माया प्रेस रोड, प्रथम संस्करण

7- हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम-सं० डॉक्टर वेद प्रताप वैदिक, प्रथम संस्करण 1979, प्रकाशक नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

8- हिंदी पत्रकारिता- डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 1969

9- हिंदी पत्रकारिता, विविध परिदृश्य-संजीव भानावत रचना प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण 1992

10- समकालीन पत्रकारिता-सं० राज किशोर -प्रथम संस्करण 1994 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

11- हिंदी विज्ञापनों की भाषा-आशा पांडेय, प्रथम संस्करण 1986 प्रकाशक ब्लेकी एंड संस पब्लिशर्स प्रा०लि०

12 -समाचार पत्रों की भाषा-डॉक्टर माणिक मृगेश- प्रथम संस्करण 1999, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।